(अजमेर) आदि इसके अधीन थे। इवा, पारद (सूरत की पार नदी), दमण (दमण गंगा) आदि नदियाँ इसी की सीमा में थी। त्रिरश्मि पर्वत पर अनेक गुफाएँ इसने दान दी थीं जो इसके ही राज्य का अंग रहा होगा। इसकी पुष्टि इसके सिक्कों से होती है जो महाराष्ट्र, काठियावाढ़, अजमेर और कुछ दक्षिणी सिन्धु में मिले हैं। अतः इसके साम्राज्य में महाराष्ट्र, अपरान्त, मालवा, गुजरात, काठियावाढ़, राजस्थान और निचले सिन्धु घाटी के भाग सम्मिलित थे। इसके लिए एक युद्ध का उल्लेख यहाँ हुआ है कि इसने मालवों से घिरे अपने मित्र उत्तमभद्रों की सहायता के लिए जाकर मालवों को पराजित किया और उपलक्ष में पुष्कर तीर्थ में स्नान कर 3000 गाँवों और गायों का दान किया।

इसके बाद उषवदात्त पोक्षरिताल जाकर स्नान करके 3000 गौ और बहुत से ग्रामों को देकर नगर के उत्तर स्थित भूमि को जो वाराहिपुत्र अश्वभूति के अधीन था इसने 4000 कार्षापण पर खरीद कर उसे भी दान दे दिया। यह भूमि उन लोगों को भोजन देने के प्रयोग में लाने के लिए खरीदी गई थी जो परिव्राजक इन नासिक की गुफाओं में निवास करते थे।

इन विवरणों से स्पष्ट है कि शकों का भारतीय संस्कृति में मिश्रण हो चुका था। तभी भारत की सभी धार्मिक परम्पराएँ यथा तीर्थ स्थलों की मान्यताएँ, वहाँ दान देना, भोजना कराना, पुण्य नदियों में स्नान करना तथा उसके बाद अनेक प्रकार के दान का उल्लेख यहाँ किया गया है। यहाँ जिन दान या तीर्थों का उल्लेख है वे पुराणों में पुण्य प्राप्ति के माध्यम बताए गए हैं। अतः पौराणिक धर्म का प्रत्यारोपण इनमें भी होने लगा था। यहाँ यह भी उल्लेख है कि साथ-साथ बौद्ध धर्म की भी मान्यता प्रचलित थी तभी भिक्षु संघ के लिए दान किया गया है। लगता है इस संघ में विरोध था तभी बिना भेदभाव के भोजन की चर्चा है।

इस प्रकार इस लेख के विवरण से जहाँ हिन्दू धर्म में शक क्षत्रपों की आस्था का ज्ञान मिलता है वहीं तत्कालीन पश्चिमी दक्षिण भारत की आर्थिक अवस्था के विषय में भी परिचय प्राप्त होता है। भूमि व्यक्तिगत सम्पत्ति थी। राजा मात्र कर का अधिकारी था। तभी वाराहीपुत्र अश्वभूति से 4000 कार्षापण पर दान हेतु राजा द्वारा भूमि क्रय करने का उल्लेख है। इसके साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि उस समय सुवर्ण एवं कार्षापण नामक सिक्के प्रचलन में थे। सामाजिक अवस्था के सम्बन्ध में इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणों का स्थान धर्म में सर्वोच्च था। तत्कालीन परिस्थिति पर प्रकाश डालने के लिए केवल यही एक मात्र अभिलेख नहीं है पर इसके समान अन्य अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं।

4. रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख
(Junagarh Rock Inscription of Rudra-Daman)

स्थान : जूनागढ़, गुजरात

भाषा : संस्कृत

लिपि : ब्राह्मी

काल : रुद्रदामन के राजत्वकालान्तर्गत (एक अनिर्दिष्ट संवत् का) 72वाँ वर्ष[1]

विषय : रुद्रदामन के प्रान्तीय शासक सुविशाख द्वारा सुदर्शन बाँध का पुनर्निर्माण, बाँध का पूर्व इतिहास एवं रुद्रदामन की राजनैतिक उपलब्धियों का विवरण

---

1. रायचौधरी के अनुसार यह नया पदाधिकारी है जो राष्ट्रपाल ही था तथा कुमार की तरह वेतन प्राप्त करता था। यही मत डा० पाण्डेय का मत है कि इसका शाब्दिक अर्थ है—राष्ट्रेऽधिकृत = जो प्रान्त या नगर के शासन के लिए नियुक्त हो।

मूल-पाट

1. सिद्धं(द्धम्) (।) इदं तडाकं सुदर्शनं गिरिनगराद[पि][1]......(मृ)[त्ति]कोपल-विस्तारायामोच्छ्रय-निःसन्धि-बद्ध-दृढ़-सर्व्व-पाळीकत्वात्पर्व्वत-पा-
2. द-प्रतिस्पर्द्धि-सुश्लि[ष्ट]-[बन्धं]...[व]जातेनाकृत्रिमेण सेतुबन्धेनोपपन्नं सुप्रति-विहित-प्रनाळी-परीवाह-
3. मीढविधानं[2] च त्रिस्क[न्ध]......नादिभिरनुग्र[है]र्महत्युपचये वर्त्तते (।) तदिदं राज्ञो महाक्षत्रपस्य सुगृही-
4. त-नाम्नः[3] स्वामि-चष्टनस्य पौत्र[स्य] [राज्ञः क्षत्रपस्य सुगृहीतनाम्नः स्वामीजयदाम्न]: पुत्रस्य राज्ञो महाक्षत्रपस्य गुरुभिरभ्यस्त-नाम्नो रु[द्र]दाम्नो वर्षे द्विसप्ततित[मे] 70(+)2
5. मार्ग्गशीर्ष-बहुल-प्र[ति] [पदि]... : सृष्टवृष्टिना[4] पर्ज्जन्येन एकार्णवभूतायामिव पृथिव्यां कृतायां गिरेरूर्जयतः सुवर्णसिकता-
6. पलाशिनी-प्रभृतीनां नदीनां[5] अतिमात्रोद्धृत्तैर्व्वेगैः सेतुम [यमा]णानुरूप-प्रतीकार-[6] मपि गिरिशिखर-तरु-तटाट्टालकोपत[ल्प]-द्वार-शरणोच्छ्रय-विध्वंसिना[7] युगनिधन-सह-
7. श-परम-घोर-वोगेन[8] वायुना प्रमथि[त]-सलिल-विक्षिप्तजर्जरीकृताव[दी] [र्ण]... [क्षि]प्ताश्म-वृक्ष-गुल्म-लताप्रतानं[9] आ नदी[त]लादित्युद्धाटितमासीत् (।) चत्वारि हस्त-शतानि वीशदुत्तराण्यायतेन[10] एतावंत्येव [वि]स्ती[र्णे]न
8. पंचसप्तति-हस्तानवगाढेन[11] भेदेन निस्तृत-सर्व्व-तोयं मरु-धन्व[12]-कल्पमतिभृशं दु[र्द][13]...(।)...[स्य]ार्थे मौर्यस्य राज्ञः चन्द्र[गु][प्त][स्य] राष्ट्रियेण [वै]श्येन पुष्यगुप्तेन कारितं अशेकस्य[14] मौर्यस्य (कृ)ते[15] यवनराजेन तुष[ा]स्फेनाधिष्ठाय
9. प्रण[ा]ळीभिरल[ ]कृत[ ](तम्) (।) [त[त्कारित[या] च राजानुरूप-कृत-विधानया

---

1. इन्द्रजी और ब्यूलर गिरिनगर[ट्रि-पाद-रम]; गिरनार जुनागढ़ नगर का प्राचीन नाम था। सुदर्शन झील गिरनार पर्वत के पाद तल में बनाया गया था। यह स्थान अभिलेख की प्राप्ति स्थान के पास ही है।
2. मीढ का अर्थ है गोमूत्रक इन्द्रजी का अनुवाद है—'the outline of which runs in curves like a stream of urnie'. कीलहार्न के अनुसार मीठगिगिर गोबर का ढेर अनुवाद करते हैं—
3. देखिए : नामापि गृह्यतोऽस्य पापकारिणः पापमलेन लिप्यत इव मे जिह्वाः हर्षचरित, पृ० 210.
4. इन्द्रजी और ब्यूलर : सुम्रट
5. पढ़ें : ० नाम् अति०
6. ब्यूलर : ० र्व्यमाणा०.
7. उपतल्प का अर्थ है तल्प रघुवंश XVI, 11, ऊपरी मंजिल शरणोच्छ्रय
8. पाठ : वेगेन
9. पाठ : तानम् आ०
10. पाठ : विंशत्यु०
11. कीलहार्न सप्तति
12. पढ़ें : धन्व
13. कीलहार्न ने जोड़ा है दुर्दर्शनमासीत्
14. पढ़ें : कारित्। अशोकस्य
15. भाऊदाजी पढ़ते हैं : तेन, और इन्द्रजी : तत् कीलहार्न : कृते

तस्मिं[1] [भे]दे दृष्टया प्रनाड्या[2] वि[स्तृ]त-से[तु]......णा[3] आ गर्भात्प्रभृत्यवि[ह]त-समुदि[व[4]-रा]जलक्ष्मी-धारणा-गुणतस्सर्व्व-वर्णैरभिगंम्य[5] रक्षणार्थं पतित्वे वृतेन [आ] प्राणोच्छासात्पुरुषवधनिवृति-कृत-

10. सत्यप्रतिज्ञेन अन्य[त्र] संग्रामेष्वभिमुखागत-सदृश-शत्रु-प्रहरण-वितरणत्वाविगुण-रि[पु]......त-कारुण्येन[6] स्वयमभिगतजन-पदप्रणिपति[ता][यु]षशरणदेन दस्यु-व्याल-मृग[7]-रोगादिभिरनुपसृष्टपूर्व्व-नगर-निगम-

11. जनपदानां स्ववीर्य्यार्जितानामनुरक्त-सर्व्व-प्रकृतीनां पूर्व्वापराकरान्त्यनूपनीवृदानर्त्त-सुराष्ट्र-श्व[भ्र-मरु-कच्छ-सिन्धु-सौवी]र-कुकुरापरांत-निषादादीनां[8] समग्राणां तत्पप्रभावाद्य [थावत्प्राप्तधर्मार्थ]-काम-विषयाणां[9] विषयाणां पतिना सर्व्वक्षत्राविष्कृत-

12. वीर-शब्द-जा[तो]त्सेकाविधेयानां[10] यौधेयानां प्रसह्योत्सादकेन दक्षिणापथ-पते-स्सातकर्णेद्विरपि नीर्व्याजमवजीत्यावजीत्य[1] संबंधा[वि]दूर)त [या][11] अनुत्सादनात्प्राप्तयशसा [वाद][12]......[प्रा] [प्त]-विजयेन भ्रष्टराज-प्रतिष्ठापकेन यथार्त्थ-हस्तो-

13. च्छ्रयार्जितोर्जित-धर्मानुरागेन[13] शब्दार्थ-गान्धर्व्व-न्यायाद्यानां[14] विद्यानां महतीनां पारणधारण-विज्ञान-प्रयोगावाप्त-विपुल-कीर्त्तिना तुरग-गज-रथचर्य्यासि-चर्म-नियुद्धाद्या......ति-परबल-लाघव-सौष्ठव-क्रियेण अहरहर्द्दान-मानान-

---

1. पढ़ें तस्मिन्
2. कुछ पढ़ते हैं प्रणालया
3. कुछ पढ़ते हैं नी
4. पढ़ें ससुदित
5. पढ़ें ॰गमय
6. इन्द्रजी एवं व्युलर का पाठ धृत.
7. पढ़ सकते हैं : मृगोरगा॰.
9. The restroation of the damgaed text is due mainly to Indraji. Akaravanti = Malwa; आकर = पूर्वी मालवा (विदिशा) ; अवन्ति = पश्चिमी मालवा (उज्जैन). अनूप = माहेश्वर आनर्त, आनर्त = North उत्तरी काठियावाड़ (द्वारका) ; सौराष्ट्र = दक्षिणी काठियावाड़, गिरनार, कच्छ ; मरु = मारवाड़ कच्छ : सिंधु सौवीर = पश्चिमी और पूर्वी उत्तरी काठियावाड अपरान्त = उत्तरी कोंकण शूपरिक ;
10. Read निर्व्याजमवजित्यावजित्य
11. The Kaneri Buddhist tank inscription (Luders, No. 994) mentions the *devi* of Vasishthiputra sri-Satakarni, who descended from the Kardamaka kings and was the daughter of a Mahakshatraps with name beginning with *Ru* (apparently Rudradaman.) *Devi* does not always meas a quee. Charudevi, wife of a crown-priven, is called *devi* in the British Museum grant (*infra,* Bk. III, No. 66). It is thus unbcertain whether this Satakarni was a king before the data of Rudradaman's record. The king might have been Gautamiputra Satakarni who was possibly twice defeated by Rudradaman (cf. the list of countries in line 11 with that in *infra,* No. 85, line 2).
12. Kielhorn : मा[द?].
13. Read ॰ रागेण
14. शब्द = grammar ; अर्थ = lexigraphy or politics : गान्धर्व = music ; न्याय = logic.

14. वमान-शीलेन स्थूळलक्षेण यथावत्प्राप्तैर्बलिशुल्कः-भागः[1] कानक-रजत-वज्र-वैडूर्य[2] रत्नोपचय-विष्यन्दमान-कोशेन स्फुट-लघु-मधुर-चित्र-कान्त-शब्दसमयोदारालंकृत[3]-गद्य-पद्य-[काव्य-विधान-प्रवीणे]न[4] प्रमाण-मानोन्मान-स्वर-गति-वर्ण्ण-सार-सत्वादिभिः[5]

15. परम-लक्षण-व्यंजनैरुपेत-कान्त-मूर्त्तिना स्वयमधिगतमहाक्षत्रप-नाम्ना[6] नरेंद्र-क[न्या]-स्वयंवरानेक-माल्य-प्राप्त-दाम्न[ा][7] महाक्षत्रपेण रुद्रदाम्ना वर्षसहस्राय गो-ब्रा[ह्म][ण]......[र्थं] धर्म्म-कीर्त्ति वृद्धयर्थं च अपीडयि[त्व]ा कर-बिष्टि-

16. प्रणयक्रियाभिः[8] पौर-जानपदं जनं स्वस्मात्कोशा[9] -न्महता धनौधेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुण-दृढतर-विस्तारायामं सेतुं विधा[य स]र्व्वत[टे][10]......[सु]दर्शनतरं कारितमिति (।) [अस्मि]न्नर्थे

17. [च][11]महा[क्ष]त्रप[स्य] मतिसचिव-कर्मसचिवैरमात्य-गुण[12]-समुद्युक्तैरप्यतिमहत्वा-[13] द्भेदस्यानुत्साह-विमुख-मतिभि[:] प्रत्याख्यातारंभ[ ]

---

1. स्थूललक्ष = बहुव्ययी ; बलि = tax, ofter identical with कर; शुल्क = tolls and duties ; भाग = king's grain share.
2. Read कनक. Usually वैदूर्य.
3. Cf. the characteristics of the Vaidarbha style as explained by Dandin in his *Kavyadarsa* Chater I : श्लेषः प्रसादः समता माधुर्य्यं सुकुमारता। अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजः कान्तिसमाधयः ।।41. श्लिष्टमस्पष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरम्। शिथिलं मालतीमाला लीलालिकलिला यथा ।।43. प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दीवरद्युति। लक्ष्म लक्ष्मीं मनोनीति प्रतीतिसुभगं वचद्ध ।।45. समं बन्धेष्वविषमं ते मृदु स्फुट मध्यमाः। बन्धा मृदुस्फटोन्मिश्र-वर्ण-विन्यास-योनयः ।।47. मधुरं रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः। येन माद्यन्ति धीमतो मधुनेव मधुव्रताः ।।51. कन्ये कामयमानं मां न त्वं कामयसे कथम्। इति ग्राम्योऽयमर्थात्मा वैरस्याय प्रकल्पते ।।63. अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते। बन्ध-शैथिल्य-दोषस्तु दर्शितः सर्व-कोमले ।।69. अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणेद्धता। भूः-खुर-क्षुण-नागासृग्लोहितादुदधेरिह ।।73. उत्कर्षवान् गुणः कश्चिद्यस्मिन्नुक्ते प्रतीयते। तदुदाराह्वयं येन सनाथा काव्यपद्धति ।।76. ओजः समास-भूस्त्वमेद् गद्यस्य जीवितम्। पद्रेऽप्यदाक्षिणात्यानामिदकें परायणम् ।।80. कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात्। तच्च वार्त्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि दृश्यते ।।85. अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लीकसीमानुरोधिना। सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ।।93. कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च। इति नेत्र-क्रियाध्यासाल्लब्धा तद्वाचिनी श्रुतिः ।।94.
4. This very probable restoration is due to Buhler. Various definitions of काव्य and its varieties are noticed by Sanskrit rehetorician Cf. note 5 above.
5. Read. सत्व॰
6. This possibly shows that Rudradaman became almost independent of the Kushana overlord about the end of his rule. The Kushana power by this time began to decline and was losing its hold on its southernmost province.
7. शके भारतीय परम्पराओं को अपना कर तथा भारतीय परिवार में वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा भारतीय हो चुके थे।
8. कर = टैक्स : विष्टि = बेगार ; प्रणय = दया या आपात कर
9. पढ़ें ॰कोशात्
10. इन्द्रजी और व्यूलर : [सर्व्व]नग[र]
11. दूसरों द्वारा असूचित
12. मतिसचिव (देखें धीसचिव या सलाहकार) ; कर्मसचिव = कार्याधिकारी
13. पढ़ें ॰महत्त्वा॰

18. पुनः-सेतुबन्ध-सनैराश्यादा हाहाभूतासु प्रजासु इहाधिष्ठाने पौरजानपदजनानुग्रहार्थं पार्थिवेन कृत्स्नानामानर्त्त-सुराष्ट्रानां[1] पालनार्थन्नियुक्तेन

19. पह्लवेन[2] कुलैप-पुत्रेणामात्येन सुविशाखेन यथावदर्थ-धर्म-व्यवहार-दर्शनैरनुरागमभिवर्द्धयता शक्तेन दान्तेनाचपलेनाविस्मितेनार्य्येणाहार्य्येण

20. स्वधितिष्ठता धर्म-कीर्त्ति-यशांसि भर्तुरभिवर्द्धयतानुष्ठित[मि]ति।

हिन्दी अर्थान्तर

1. सिद्धम्। यह जलाशय सुदर्शन गिरिनगर से.....मिट्टी एवं पत्थर द्वारा निर्मित— चौड़ाई, लम्बाई तथा ऊँचाई तथा बिना जोड़ के बँधे सब किनारों से दृढ़ पर्वत के

2. पाद की तरह संयुक्त रचनायुक्त, प्राकृतिक सेतुरचनायुक्त, भलीभाँति निर्मित जल प्रणाली, गंदे जलवाहक नाले

3. तथा गोमूत्र की तरह तथा तीन स्कन्धों युक्त.....आदि अनुग्रहों के कारण अत्यन्त उन्नतावस्था में है। यह महाक्षत्रप, यथायोग्य

4. नामधारण करनेवाले, स्वामि चष्टन के पौत्र, राजा क्षत्रप सुगृहीत नाम वाले स्वामी जयदामन के पुत्र, श्रेष्ठ जनों द्वारा पुनः लिये जानेवाले नाम वाले राजा महाक्षत्रप रुद्रदामन के, राज्य के 72 वर्ष में,

5. मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन.......वर्षाकारी मेघ द्वारा पृथ्वी को एक समुद्र की भाँति किये जाने वाले ऊर्जयत पर्वत से निकलने वाली सुवर्णसिकता,

6. पलाशिनी आदि नदियों के अत्यन्त बढ़े हुए वेगों के बाँध.......समुचित उपाय किये जाने पर भी पर्वत—शिखर, वृक्ष, तट, अट्टालक के ऊपरी मंजिल, शरणगृह का नाश करने वाले युग—युगों में

7. अत्यन्त तीव्र वायु द्वारा मथे हुए जल द्वारा फेंके गये तथा जर्जर किये हुए.....फेंके हुए पत्थर, वृक्ष, झाड़ तथा लता से आच्छादित नदी के तल तक टूटा हुआ था। 24 हाथ लम्बी तथा उतनी ही चौड़ी

8. और 75 हाथ गहरी दरार पड़ने से समस्त जल निकल जाने से मरु-धन्व के समान अत्यन्त दुर्दर्शन.....के लिए मौर्य राजा चन्द्रगुप्त के राष्ट्रीय[1] वैश्य पुष्यगुप्त द्वारा बनवाया गया मौर्य शासक अशोक के लिये यवनराज तुषास्फ द्वारा

9. प्रणालियों से युक्त किया गया। उसके द्वारा बनवायी हुई तथा राजानुरूप रचनावली, उस दरार से दिखायी पड़नेवाली प्रणाली द्वारा विस्तृत सेतुगर्भ से अविच्छिन्न तथा प्रकट राजलक्ष्मी धारण करने के गुण के कारण रक्षणहेतु समस्त वर्णों द्वारा आकर स्वामित्व के लिये चुने गये, मरण पर्यन्त संग्राम को छोड़कर मानव वध से निवृत्ति की

10. दृढ़ प्रतिज्ञा वाले, सम्मुख आये हुए समान शत्रु पर प्रहार न करने वाले, करुणावश स्वयं पास आये हुए तथा चरण पर झुकने वाले लोगों को जीवन रक्षण प्रदान करने वाले, डाकू, सर्प, जंगली पशुओं तथा रोगों से मुक्त नगर, निगम,

---

1. पढ़ें सुराष्ट्राणां

2. पह्लव = पार्थिन। पह्लव इरान की पुरानी पह्लवी भाषा से सम्बद्ध थे

11. तथा जनपदयुक्त अपने पराक्रम से प्राप्त प्रजानुरागयुक्त, पूर्व तथा पश्चिम आकर तथा अवन्ति, अनूप, नीवृत, आनर्त, सूराष्ट्र, श्वभ्र, भरु कच्छ, सिन्धु, सौवीर, कुकुर, अपरान्त, निषाद आदि समस्त को अपने प्रभाव के कारण यथोचित प्राप्त धर्म, अर्थ और काम विषयों के स्वामी, समस्त क्षत्रियों में प्रमुख

12. वीर उपाधि वाले उत्साह के कारण अदम्य योधाओं का बल उत्साह करने वाले, दक्षिणापथ स्वामी सातकर्णी को दो-दो बार युद्ध में जीतकर सम्बन्ध की समीपता के कारण उसका समूल नाश न करने से यश प्राप्त करने वाले, विजय प्राप्त करने वाले......पदच्युत राजाओं को पुनः उनके राज्य पर प्रतिष्ठित करने वाले, यथार्थ हाथ

13. को उठाकर दृढ़ धर्मानुराग अर्जित करने वाले, व्याकरण, संगीत, न्याय
आदि महती विद्याओं के अर्जन और व्यवहार से महान् कीर्ति प्राप्त करने वाले, घोड़े, हाथी, रथ का व्यवहार, तलवार, ढाल आदि....शत्रुबल के नाश में स्फूर्ति एवं दक्षता युक्त काम करने वाले, प्रतिदिन दान और सम्मान-प्रदान तथा

14. असम्मान का नाश करने वाले, दानशील, यथोचित बलि, कर तथा राज्यांश से सोने, चाँदी तथा हीरे, वैदूर्य आदि रत्नों की अधिकता से भरे कोषवाले, स्फुट, लघु, मधुर, चित्र, सुन्दर तथा यथोचित शब्द के प्रयोग से सुन्दर एवं अलंकृत गद्य और पद्य की रचना करने वाले लम्बाई, चौड़ाई, स्वर, गति, रंग, दृढ़ता और शक्ति आदि

15. उत्तम लक्षणों तथा चिह्नों से युक्त सुन्दर शरीरवाले, अपने द्वारा प्राप्त महाक्षत्रप उपाधिवाले स्वयवंरों में राजकन्याओं द्वारा अनेक माला प्राप्त किए हाथ वाले, महाक्षत्रप रुद्रदामन द्वारा सहस्रों वर्ष तक गोब्राह्मण धर्म यश की अत्यधिक वृद्धि के लिये कर, बेगार

16. और प्रीति-कार्य से पुर और जनपद के लोगों को कष्ट में न डाल कर अपने कोष से प्रचुर धन द्वारा बिना अधिक समय लगाये विस्तार तथा लम्बाई में पहले से तिगुना दृढ़.....बनाकर सभी किनारों पर......अधिक सुन्दर लगने वाला बतलाया इस विषय में।

17. बाँध में दरार के बड़े होने के कारण अमात्यगुण सम्पन्न राय देने वाले तथा कार्य पूरा करने वाले महाक्षत्रप के सचिवों के उत्साह के अभाव से इसके निर्माण कराने के विरुद्ध विचार रखने पर

18. बाँध के पुनर्निर्माण न होने की निराशा से प्रजा द्वारा क्रंदन करने पर, पुर और जनपद के लोगों के लिये इस स्थान पर राजा द्वारा सम्पूर्ण आनर्त तथा सुराष्ट्र के शासन के लिए नियुक्त

19. उचित रूप से अर्थ और धर्म के व्यवहार तथा दर्शन द्वारा प्रजा प्रेम में वृद्धि करने वाले, सक्षम, धैर्यवान, गम्भीर, विनम्र, श्रेष्ठ तथा दृढ़ निश्चयी पह्लव वंशी, कुलैपपुत्र, अमात्य सुविशाख के द्वारा

20. अपने शासन के द्वारा अपने स्वामी के धर्म-कीर्ति और यश की वृद्धि करते हुए इसे सम्पूर्ण किया गया था।

ऐतिहासिक महत्त्व

यह अभिलेख काठियावाड़ के जूनागढ़ जिले में गिरिनार परर्वत के कण्ट प्रदेश में, घाटी की ओर जाने वाले भाग में शुद्ध संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण हैं। अशोक तथा स्कन्दगुप्त के भी अभिलेख इसी पर्वत पर अंकित है। अतः यह ऐतिहासिक और पर्यटन के महत्त्व का स्थान रहा होगा।

डॉ० फ्लीट के अनुसार इस अभिलेख में दक्षिण भारत में प्रयुक्त किए जाने वाले अक्षर हैं। यही विचार ब्यूलर का भी है। इस लेख में 72 तिथि अंकित हैं। इसमें 70 तथा 2 के लिए अलग-अलग चिह्न बने हैं। इस अभिलेख के अन्त में एक छोटी-सी झुकी हुई रेखा खिंची है।

इस अभिलेख का नायक रुद्रदामन है जिसकी उपाधि 'महाक्षत्रप' है। इस अभिलेख से रुद्रदामन के वंश, कृतित्व, व्यक्तित्व और सुदर्शन झील के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है तथा समकालीन इतिहास भी आलोकित होता है। इस सन्दर्भ में यहाँ इसकी तिथि तथा समसामयिक राजाओं की चर्चा भी की गई है। यद्यपि इसके कई अभिलेख मिले हैं किन्तु यह अकेला अभिलेख है जो उसके सम्बन्ध में व्यवस्थित ज्ञान देता है। ऊपर के विवरण से ज्ञात होता है कि यह 'क्षत्रप' था। क्षत्रप शकों से सम्बन्धित थे। क्षत्रप शब्द गवर्नर के लिए प्रयुक्त है। यह फारसी भाषा के 'क्षथ्रपावन' शब्द से लिया गया है। इस शब्द का प्रयोग बेहुस्तान के अभिलेख में मिलता है जिसका अर्थ है 'राज्य का संरक्षक'। इसी से क्षत्रपी प्रणाली तथा क्षत्रप-वंश का प्रयोग शकों के काल में हुआ जो सम्भवतः अपनी मूल शाखा से स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर लिए होंगे। इस प्रकार की पाँच क्षत्रपियाँ शकों के राज्य में स्थापित हो चुकी थीं जिसमें तीन पश्चिमी भारत में थीं—मथुरा, तक्षशिला और पंजाब तथा दो दक्षिणी भारत में—उज्जैन तथा महाराष्ट्र। रुद्रदामन उज्जैन के क्षत्रप परिवार का प्रमुख शासक था।

इस अभिलेख से निम्नांकित तथ्य ज्ञात होते हैं—

(अ) रुद्रदामन के वंश का परिचय यहाँ दिया गया है कि वह ख्याति प्राप्त राजा महाक्षत्रप—स्वामी चष्टन का पौत्र था तथा राजा क्षत्रप स्वामी जयदाम्न का पुत्र था। यहाँ महाक्षत्रप के साथ राजा (राज्ञः) शब्द का प्रयोग इस शक परिवार से स्वतन्त्र सत्ता का द्योतक है।

(ब) यहाँ चष्टन तथा रुद्रदामन के लिए जबकि 'महाक्षत्रप' शब्द का प्रयोग राजनीतिक दृष्टि से उनकी महानता तथा स्वतन्त्र स्थिति का द्योतक है वहीं जयदामन के लिए प्रयुक्त 'क्षत्रप' शब्द उसकी हीन अवस्था के द्योतक है। पर अन्य शासकों की तरह 'राज्ञः' और 'स्वामी' ये दोनों विशेषण जयदामन के लिए भी यहाँ प्रयुक्त हैं। इससे ज्ञात होता है कि यह भी किसी-न-किसी प्रकार का शासक अवश्य था। किन्तु लगता है कि यह चष्टन के अधीन कहीं का शासक रहा होगा तभी इसको महाक्षत्रप नहीं कहा गया है। इसके सिक्कों पर अंकित 'स्वामी' और 'राजा' शब्द भी इसी तथ्य को पोषित करते हैं। ब्यूलर तथा डॉ० भण्डारकर के अनुसार जयदामन के समय सम्भवतः सातवाहनों के विजय के कारण शक सत्ता का पतन हो गया था। इसी से जयदामन ने लघु उपाधियाँ धारण की होंगी। इसकी पुष्टि के लिए इसी अभिलेख की 15वीं पंक्ति के 'स्वयमधिगत-महाक्षत्रप-नाम्ना' वाक्य को लिया है जिसका अर्थ है कि 'स्वयं उसने अपने पराक्रम से महाक्षत्रप नाम धारण किया था' जो सम्भवतः पहले न किया गया था। किन्तु डा० आर० सी० मजुमदार ने आन्धौ अभिलेख में प्रयुक्त—'राज्ञः चष्टनस यसोमतिक पुत्रस राज्ञः रुद्रदामस जयदमपुत्रस्य वर्षे द्विपचासे' का अर्थ किया है—'यसोमतिक के पुत्र राजा चष्टन और जयदामन के पुत्र राजा रुद्रदामन के 52वें (शासन) वर्ष में।' इससे ज्ञात होता है कि चष्टन और रुद्रदामन ने कुछ दिनों तक साथ-साथ शासन किया। अतः जयदामन के स्वतन्त्र शासन की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। वह अपने पिता के राज्यकाल में ही कहीं का अधीनस्थ शासक रहा होगा और इसी समय मर भी गया होगा। 'स्वयमधिगतिनाम्न' का उल्लेख उसके प्रभाव का द्योतक रहा होगा।

(स) इस अभिलेख में रुद्रदामन का काल 72, एक अनिर्दिष्ट सम्वत् में, उल्लिखित है। शक

परिवार से सम्बन्धित होने के कारण अवश्य ही शक सम्वत् का प्रयोग किया होगा। इस प्रकार 72 + 78 = 150 ई० इसका शासन काल ज्ञात होता है। अतएव इसका राजत्वकाल लगभग 150 ई० माना जा सकता है। सम्भवतः यह लम्बे समय तक शासन किया था इसी से इसके बाद की मुद्राओं पर उसकी आकृतिक वृद्ध की अंकित है।

(द) रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख की 11वीं पंक्ति में उसके द्वारा स्ववीर्य्यार्जित राज्यों का नाम दिया गया है। इससे विदित होता है कि उसने विशाल विजय करके एक विस्तृत राज्य स्थापित किया था। यहाँ वर्णित है—

1. पूर्वापराकरावन्ति = (पूर्व=) पूर्वी और (अपर=) पश्चिमी (आकर=) मालवा और अवन्ति
2. अनूप = मान्धाता प्रदेश
3. आनर्त = द्वारिका का चतुर्दिक प्रदेश
4. सुराष्ट्र = जूनागढ़ के पड़ोस का स्थान
5. स्वभ्र = सावरमती नदी का तटीय भाग
6. मरु = मारवाड़
7. कच्छ = कच्छ की खाड़ी का भाग
8. सिन्ध = सिन्धु प्रदेश
9. सौवीर = सिन्धु नद का डेल्टा का भाग (निचला सिंधु प्रदेश)
10. कुकुर = सिन्धु नदी एवं वारिपाम पर्वत के बीच का स्थान (उत्तरी काठियावाढ़)
11. अपरान्त = उत्तरी कोंकण
12. निषाद = सरस्वती और पश्चिमी विन्ध्य का प्रदेश
13. आदीनां = अन्य बहुत से भाग।

इनके साथ 'यौधेयों' का भी उल्लेख है। पाणिनि के अष्टाध्यायी तथा अन्य स्रोतों से ज्ञात होता है कि सतलज नदी के किनारे जोहियावार स्थान में रहने वाली यह एक जाति थी।

इसने सातकर्णी को भी दो बार पराजित किया था पर सम्बन्ध की समीपता के कारण उसे विनष्ट नहीं किया। इस कथन से दो बातें स्पष्ट होते हैं—एक यह कि रुद्रदामन ने सातकर्णी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था तथा दूसरे कि रुद्रदामन ने सातकर्णी को दो बार पराजित किया पर उसे विनष्ट नहीं किया। इस सम्बन्ध की सबसे जटिल समस्या यह है कि रुद्रदामन ने किस सातकर्णी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया था ? विभिन्न प्रमाणों से ज्ञात होता है कि रुद्रदामन ने अपनी लड़की का विवाह वाशिष्टिपुत्र श्री सातकर्णी से किया था। इसकी पुष्टि कन्हेरी के अभिलेख से होती है। डा० भण्डारकर के अनुसार दूसरा सातकर्णी रुद्रदामन द्वारा पराजित गौतमीपुत्र श्री सातकर्णी था। परन्तु यह विचार मान्य नहीं प्रतीत होता क्योंकि सातकर्णी की मुद्राओं से ज्ञात होता है कि इस सातवाहन नरेश ने शक-क्षत्रपों को पराजित किया था। इसकी पुष्टि जोगलठम्भी निधि से प्राप्त सिक्कों से भी होती है जिस पर नहपान की मुहर के ऊपर गौतमीपुत्र की मुहर लगी है। इसके अभिलेख से भी यही ज्ञात होता है कि इसने 'क्षहरातकुल निरवशेषकरसि' की उपाधि धारण किया था। इस प्रकार इस सातवाहन नरेश द्वारा शकों के विनाश की सूचना प्राप्त होती है जबकि यहाँ उल्लेख ठीक इसके

विपरीत है। इसलिए डा० रैप्सन ने डा० भण्डारकर के मत के विरोध में यह विचार प्रतिपादित किया है कि यह पराजित शासक सातकर्णी कोई दूसरा सातवाहन शासक नहीं था परन्तु यह रुद्रदामन का ही दामाद वाशिष्टिपुत्र श्री सातकर्णी रहा होगा। पुनः वासिष्टिपुत्र पुलमावी के वर्ष 19 के नासिक अभिलेख में उसे केवल 'दक्षिणापथेश्वर' कहा गया है। पर अभिलेखों और मुद्राओं से ऐसा ज्ञान नहीं मिलता। टालमी के अनुसार पुलमावी चष्टन के समकालीन था। डेब्रुएल ने इसे शिवश्री सातकर्णी माना है। किन्तु यह गौतमीपुत्र का उत्तराधिकारी नहीं था। अतः इसे वासिष्टिपुत्र श्रीसातकर्णी मानना उचित लगता है।

(य) इस गिरनार पर्वत पर जितने भी शासकों के अभिलेख प्राप्त हुए हैं सभी में सुदर्शन झील का उल्लेख किसी-न-किसी प्रकार अवश्य हैं। अशोक के जूनागढ़ अभिलेख, स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख तथा इस अभिलेख में भी अन्य बातों के विवरण के साथ-साथ सुदर्शन झील का वर्णन मिलता है। इसका कारण यह है कि वहाँ के जनजीवन में सुदर्शन झील का विशेष महत्त्व रहा होगा। विभिन्न विपदाओं और प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण समय-समय पर इसकी स्थिति बिगड़ती रही। इसलिए इस प्रदेश में जिस किसी भी शासक ने पैर रखा उसने अवश्य ही इसकी ओर अपना ध्यान दिया और इसे ठीक कराया। इस अभिलेख से भी ज्ञात होता है कि रुद्रदामन के शासन काल में सुदर्शन दुर्दर्शन बन गया था। यह झील अशोक के पितामह चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवायी गयी थी और इसके संरक्षण का भार उसने अपने मंत्री पुष्यगुप्त को सौंपा था। पर जब अशोक गद्दी पर बैठा तब तक इस झील की दशा शोचनीय हो चुकी थी। इसने धन व्यय कर पुनः इसके बाँध को निर्मित कराया तथा यहाँ के अपने प्रान्तपति तुहशाष्प को, जो यवन था, इसकी देख-रेख के लिए नियुक्त किया। इस उल्लेख से ज्ञात होता है कि अशोक के समय सौराष्ट्र पूर्णतया उसके अधीन था तथा यहाँ का प्रान्तपति यवन तुहशाष्प था। पुनः इस अभिलेख के नायक रुद्रदामन के समय इस झील की दशा और भी अधिक शोचनीय हो चुकी थी। इसने अपने सभासदों के विरोध करने पर भी जन-कल्याण के लिए बिना जनता पर किसी प्रकार का अतिरिक्त, अनुचित और अनियमित कर लगाए इसको पुनर्निर्मित कराया। इस समय सौराष्ट्र में इसका शासक सुविशाख नियुक्त था। इस झील का जीर्णोद्धार रुद्रदामन ने मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष के प्रथम दिवस 72वें वर्ष में कराया था। इस तिथि की गणना का सम्वत् यहाँ नहीं दिया गया है। पर यह शक-क्षत्रप था। शकों ने अपनी एक काल गणना थी। अतएव 72 भी शक संवत् में रहा होगा। इस प्रकार इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि रुद्रदामन (72 + 78) 150 ई० में शासन करता था। इस प्रकार सुदर्शन झील के सम्बन्ध में व्यवस्थित विवरण तथा उसका पूर्व इतिहास इस अभिलेख से मिलता है।

●